Major Semester -V, 2023-2027 दिनांक- 10/02/2026,

Nature of Clinical Psychology.

नैदानिक मनोविज्ञान की एक प्रमुख शाखा है। जिसमें मानसिक रोगों के निदान तथा उपचार पर कार्य किया जाता है। नैदानिक मनोविज्ञान पद का प्रतिपादन सर्वप्रथम पहले लाइटनर विटमर ने 1896 में किया। नैदानिक मनोविज्ञान का संबंध मानसिक रोगों के वर्गीकरण, निदान तथा पूर्वानुमान से होता है। इसमें मानसिक रोगों का उपचार मनोवैज्ञानिक विधियों द्वारा किया जाता है। साधारण शब्दों में कहा जाए तो नैदानिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की ही एक शाखा है जो आंकलन, निदान और उपचार पर केन्द्रित है। अतः नैदानिक मनोविज्ञान की प्रकृति को निम्न ढंग से किया जा सकता है।

(i) आंकलन एवं निदान - नैदानिक मनोविज्ञान में विभिन्न तकनीकों का उपयोग मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों के आंकलन और निदान के लिये किया जाता है।

(ii) उपचार - साक्ष्य-आधारित उपचार विधियाँ विकसित करते हैं। तथा उनको रोगी पर लागू किया जाता है। उसका उपयोग किया जाता है। जिसके अंतर्गत मनोचिकित्सा, व्यवहार चिकित्सा और संज्ञानात्मक व्यवहार चिकित्सा आदि का प्रयोग किया जाता है। अलग-अलग प्रकार के रोगों के लिए अलग-अलग चिकित्सा विधियों का उपयोग होता है।

(iii) शोध एवं मूल्यांकन - नैदानिक मनोविज्ञान में शोध कार्य किये जाते हैं। तथा उनका मूल्यांकन किया जाता है। जिससे कि मानसिक स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न मुद्दों को भली भाँति समझा जा सके तथा उनका उपचार भली-भाँति से सही विधि द्वारा हो। निरंतर शोध कार्य होना अत्यधिक आवश्यक है। क्योंकि नयी मानसिक बीमारियाँ सामने आ रही हैं, अतः उसके अनुसार ही उपचार विधियों और उपकरणों का प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है।

(iv) जैव-मनोविज्ञान प्रतिरूप - इस प्रतिरूप के अंतर्गत जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक

सामाजिक कारकों को एकीकृत करके प्रतिरूप तैयार किए जाते हैं। जो मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों को समझने में सहायक होता है। यथा अपनी आनुवांशिकी से कुछ गुणों को प्राप्त करता है। परन्तु कभी इन गुणों का प्रभाव इस प्रकार से होता है। कि मस्तिष्क में असंतुलन उत्पन्न हो जाती है। इसी प्रकार से मानसिक असंतुलन और सामाजिक कारक भी व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। अतः जैव मनोवैज्ञानिक प्रतिरूप में इन सभी कारकों को सम्मिलित करना आवश्यक होता है।

([illegible]) संज्ञानात्मक व्यावहारिक सिद्धांत - यह सिद्धांत मानसिक स्वास्थ्य के अचेतन संवेदित विचारों, भावनाओं और अनुभवों की समझ पर केंद्रित होता है। इस सिद्धांतों के अनुसार व्यक्ति को अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों के माध्यम से ही ज्ञान प्राप्त होता है। वह व्यक्ति के व्यवहार पर किसी न किसी प्रकार से प्रभाव डालता है। जो प्रभाव जब नकारात्मक होते हैं। तब व्यक्ति मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाता है।

(4) मनोगत्यात्मक सिद्धांत - यह सिद्धांत अचेतन विचारों, भावनाओं और अनुभवों पर केंद्रित है। व्यवहार को आकार देने में अचेतन विचारों भावनाओं और अनुभवों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। व्यक्ति अपने जिन भावनाओं और अनुभवों को अभिव्यक्त नहीं कर पाता है। वे सब उसके अचेतन मन में चले जाते हैं। परंतु समाप्त नहीं होते हैं। जिस व्यक्ति का चेतन मन कुण्ठावस्था में होता है। तो वे जागृत हो जाते हैं। और व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। अतः मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को समझने के लिए अचेतन मन की स्थिति को जानना आवश्यक होता।

। [illegible] 10/08/2024 —